दैनिक जागरण

संतुष्टि की अवस्था में व्यक्ति सदैव तनावमुक्त रहता है

राहुल की पेशकश

इस सूचना का कोई मतलब नहीं कि राहुल गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद छोड़ने की पेशकश की, जिसे पार्टी व नेताओं ने ठुकरा दिया। इसका अर्थ तो यही निकाला जाएगा कि वह या तो कांग्रेस की अध्यक्षता छोड़ने के लिए तैयार नहीं या फिर उन्होंने इस्तीफे की पेशकश इसी इरादे से की ताकि अपने लिए समर्थन और सहानुभूति अर्जित की जा सके। बेहतर हो कि इस पर वह भी गहन आत्ममंथन करें और पार्टी के वरिष्ठ नेता भी कि उन्हें अध्यक्ष बने रहना चाहिए या नहीं? यदि आत्ममंथन के नाम पर खानापूरी की जाएगी तो फिर कांग्रेस को कुछ हासिल होने वाला नहीं है। कांग्रेस के जो भी नेता यह दलील देने में लगे हुए हैं कि लोकसभा चुनाव में पार्टी को मिली पराजय त्रासदी सरीखी नहीं वे जानबूझकर सच को स्वीकार करने से इन्कार कर रहे हैं। क्या यह हास्यास्पद नहीं कि एक दर्जन से अधिक राज्यों में कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला और फिर भी राहुल गांधी को यह समझाने की कोशिश हो रही है कि हम बुरी तरह हारने से बच गए। यह तो जीती मक्खी निगलने वाली बात हुई। क्या ऐसे नेता कांग्रेस के हितैषी कहे जा सकते हैं? कहीं ये वही तो नहीं जो जनाधार न रखने के बावजूद इसलिए पार्टी के महत्वपूर्ण पदों पर हैं, क्योंकि दरबारी संस्कृति में माहिर हैं? पार्टी में ऐसे नेताओं के हावी रहते हुए यह संभव ही नहीं कि हार के कारणों की सही तरह समीक्षा हो सके।

यह सही है कि कांग्रेस को गांधी परिवार का सहारा चाहिए, लेकिन आखिर इसका क्या मतलब कि सोनिया गांधी के बाद राहुल गांधी ने अध्यक्ष पद हासिल कर लिया और फिर उन्होंने बहन प्रियंका गांधी को सीधे महासचिव बना दिया। आखिर यह फैसला उनकी किस योग्यता के आधार पर हुआ? कहीं इस आधार पर तो नहीं कि वह इंदिरा गांधी की तरह दिखती हैं? क्या यह परिवारवाद की पराकाष्ठा नहीं कि सोनिया गांधी संप्रग अध्यक्ष, राहुल गांधी कांग्रेस अध्यक्ष और प्रियंका गांधी महासचिव? इसकी भी अनदेखी न करें कि प्रियंका के महासचिव बनने के बाद उनके पति राबर्ट वाड्रा भी राजनीति में सक्रिय होने के संकेत दे रहे थे। क्या राहुल गांधी का हाथ केवल परिवार के लोग ही बंटा सकते हैं? यह तो परिवार को कुछ वैसे ही प्रश्रय देना हुआ जैसे मुलायम सिंह और लालू यादव ने दिया। इससे इन्कार नहीं कि उपाध्यक्ष और फिर अध्यक्ष बनने के बाद राहुल गांधी के तौर-तरीकों और भाषा-शैली में कुछ बदलाव आया है, लेकिन वह रह-रह कर यह आभास भी कराते रहते हैं कि राजनीति उनका मूल स्वभाव नहीं। उन्हें पार्टी की कमान अपने हाथ में रखनी चाहिए या नहीं, इस बारे में सबसे बेहतर तरीके से फैसला वह खुद ही कर सकते हैं। देखना केवल यह नहीं है कि राहुल गांधी कांग्रेस अध्यक्ष बने रहते हैं या नहीं, बल्कि यह भी है कि उनके या फिर परिवार से इतर नेता के नेतृत्व में पार्टी की रीति-नीति में आमूल-चूल बदलाव आता है या नहीं? आज कांग्रेस परिवार शासित ऐसा संगठन अधिक है जो सत्ता में रहना अपना खानदानी अधिकार समझता है। आज के भारत में इस मानसिकता के लिए कोई स्थान नहीं।

अब काम का वक्त

लोकसभा चुनावों के नतीजे घोषित होने के साथ ही उत्तराखंड आचार संहिता के दायरे से बाहर निकल आया है। यानी राज्य सरकार को नए काम शुरू करने और नई नीतियां तय करने की आजादी मिल गई है। आचार संहिता के चलते केवल रुटीन कामकाज को छोड़कर सरकार के हाथ एक प्रकार से बंध से गए थे। यद्यपि चुनाव आयोग ने जरूरी कार्यों को अनुमति लेकर शुरू करने का विकल्प खुला रखा हुआ था, लेकिन चुनाव की आपाधापी के बीच तंत्र इससे बचता दिखा। इसमें दो राय नहीं कि चुनावों के चलते उत्तराखंड में पिछले ढाई महीने के अंतराल में सरकारी कामकाज की चाल धीमी रही। स्वाभाविक भी था, आम से लेकर खास तक इसी उधेड़बुन में था कि देश में अगली सरकार किसकी बनने जा रही है। नतीजे घोषित होने के बाद यह तस्वीर भी साफ हो गई। उत्तराखंड में सभी सीटों पर कमल खिला है यानी फिर से डबल इंजन। ऐसे में आमजन की उम्मीदें बढ़ गई हैं। लिहाजा, तंत्र को बगैर देरी किए अब शिद्दत के साथ काम में जुट जाना चाहिए। चुनावी खुमारी से जितनी जल्दी बाहर निकल आएं, उतना ही अच्छा रहेगा। आचार संहिता से अटकी फाइलों को आगे बढ़ाना होगा। योजनाएं चाहे केंद्र सरकार के स्तर की हों या फिर राज्य सरकार के, सभी में तत्परता दिखाने की जरूरत है। अच्छी बात यह कि राज्य और केंद्र में एक ही दल की सरकार है, टकराव जैसी कोई स्थिति शायद नहीं है। नवनिर्वाचित सांसदों पर भी बेहतर प्रदर्शन का दबाव रहेगा और रहना भी चाहिए। क्योंकि जनता जनार्दन ने जिस अंदाज में उन पर विश्वास जताया है, उसमें ऐसी उम्मीद करना गलत भी नहीं है। संभवतः तंत्र इससे भलीभांति वाकिफ होगा, लिहाजा इसके लिए अभी से सक्रिय होने की जरूरत है। यह इसलिए भी जरूरी है कि राज्य में अगले कुछ महीनों में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव होने हैं, तब फिर से प्रदेश आचार संहिता की बंदिश में जकड़ जाएगा, यानी वित्तीय वर्ष के तकरीबन छह महीने आचार संहिता में गुजर जाएंगे। ऐसे में केंद्र और राज्य के बजट का कितना उपयोग हो पाएगा, इसको लेकर संशय बना रहेगा। सरकार को इन पहलुओं पर गंभीरता से मंथन करना चाहिए, ताकि साल के अंत तक आवंटित राशि पूरी तरह खर्च हो सके। उम्मीद है कि सरकार इस दिशा में सोच रही होगी।

मोदी की साख ने किया बड़ा बदलाव

संजय गुप्त

अपनी साख के चलते मोदी नए-पुराने मतदाताओं को यह भरोसा दिलाने में सफल रहे कि उनकी सरकार सबका साथ-सबका विकास के प्रति प्रतिबद्ध है

आम चुनाव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को जो विजय मिली उसके पीछे कई कारण गिनाए जा रहे हैं, लेकिन गौर से देखा जाए तो इस प्रचंड जीत का प्रमुख कारण रहा प्रधानमंत्री मोदी की अपनी साख। 2014 में जब वह पहली बार प्रधानमंत्री बने थे तब भी उन्हें प्रबल बहुमत मिला था। यह इस उम्मीद के तहत था कि गुजरात में सफल शासन दे चुके मोदी बतौर प्रधानमंत्री अपनी सरकार को नए तरीके से चलाएंगे। मोदी ने सत्ता में आते ही नौकरशाही के तंत्र को कसा। साथ ही कुछ नए कार्यक्रम शुरू किए, जिनमें स्वच्छता अभियान और उसके तहत शौचालयों का निर्माण प्रमुख रहा। इसके अलावा हर घर बिजली पहुंचाने और गरीब परिवारों को रसोई गैस सिलेंडर एवं आवास देने की योजनाओं ने भी असर दिखाया। खास बात यह रही कि पांच साल के शासन में मोदी सरकार के भ्रष्टाचार का कोई मामला सामने नहीं आया। मोदी सरकार ने अपनी जन कल्याणकारी योजनाओं को जमीन पर उतारने के साथ ही नए मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित किया। अपनी साख के चलते मोदी नए-पुराने मतदाताओं को यह भरोसा दिलाने में सफल रहे कि उनकी सरकार सबका साथ-सबका विकास को लेकर प्रतिबद्ध है। दूसरी तरफ कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी मोदी सरकार का मुकाबला करने के नाम पर ऐसा रवैया अपनाए रहे जैसे उनकी विरासत छीन ली गई हो। वह मोदी के खिलाफ लगातार अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते रहे। राहुल तैश में आकर बोलते समय शायद यह सोचते रहे कि वह जनता को मोहित कर रहे हैं, लेकिन इसका जनता पर विपरीत असर पड़ा। भले ही राहुल यह कहते रहे हों कि वह प्यार की राजनीति करते हैं, लेकिन उनकी इस शैली में अहंकार ही झलकता था। वहीं मोदी जब कभी गांधी परिवार को कठघरे में खड़ा करते तो भी शालीनता के दायरे में रहते। जनता ने अपने पीएम के खिलाफ अपशब्दों को स्वीकार नहीं किया। चूंकि राहुल का राजनीतिक कद मोदी से हमेशा से कमतर ही रहा इसलिए चुनाव के दौरान उनके अशालीन आचरण ने उनकी और कांग्रेस की साख पर बट्टा लगाने का काम किया। इसी कारण जहां भाजपा को पहले से ज्यादा सीटें मिलीं वहीं कांग्रेस को फिर करारी हार झेलनी पड़ी। इसमें एक बड़ा योगदान भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की चुनावी रणनीति का भी रहा।

अमित शाह ने एक सक्षम नेता की मोदी की छवि को बखूबी जनता के सामने रखा। भाजपा में पन्ना प्रमुख बनाकर वह पार्टी की रीति-नीति में व्यापक तब्दीली लाए। उन्होंने संगठन को मजबूत बनाने के लिए देश भर में सघन दौरे किए। इसके बेहतर नतीजे सामने आए और भाजपा अपने वोट प्रतिशत को भी बढ़ाने में सफल रही। कई सीटों पर भाजपा प्रत्याशी की जीत का अंतर दूसरे और तीसरे नंबर पर रहे प्रत्याशी को मिले कुल वोटों से अधिक रहा। अमित शाह का यह दावा कई सीटों पर सही साबित हुआ कि भाजपा 50 प्रतिशत से अधिक मत हासिल करके दिखाएगी। विरोधी दल उनकी रणनीति के सामने ठहर नहीं सके। जनादेश बता रहा है कि मतदाताओं ने परिवारवाद पर टिके क्षेत्रीय दलों को नकार दिया। एक तरह की सामंती मानसिकता के तहत संचालित होने वाले जो क्षेत्रीय दल पुराने तौर-तरीकों पर टिके रहे, कांग्रेस उनके ही सहारे मोदी का मुकाबला करने की तैयारी करती रही और इसी कारण नाकाम रही। वह महागठबंधन भी नहीं बना सकी, जबकि इसके लिए कवायद खूब की गई। कांग्रेस चुनावी रणनीति के मामले में किस तरह भाजपा से बहुत पीछे रही, यह इससे साबित होता है कि राहुल गांधी जब इस उधेड़बुन में थे कि वह अध्यक्ष बनें या नहीं तब अमित शाह पार्टी को विस्तार देने में जुटे हुए थे। चूंकि भाजपा हिंदू जीवन शैली और मान्यताओं को महत्व देने वाली पार्टी है इसलिए मोदी को यह प्रमाणित करने की जरुरत ही नहीं थी कि वह किन मूल्यों की पैरवी करते हैं। इसके विपरीत राहुल गांधी को यह बताना था कि वह मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति छोड़ रहे हैं। उन्होंने मंदिरों की दौड़ लगाई और खुद को जनेऊधारी घोषित करवाया, लेकिन देश ने इस पाखंड को अस्वीकार्य कर दिया। चुनाव नतीजे इसकी पुष्टि भी कर रहे हैं।

अवधेश राजपूत

राहुल गांधी बहन प्रियंका को ठीक चुनाव के पहले महासचिव बनाकर राजनीति में लाए, लेकिन इससे पार्टी को कोई लाभ नहीं मिला। वह जिस पूर्वी उत्तर प्रदेश की प्रभारी बनीं वहां से कांग्रेस सिर्फ रायबरेली में जीत हासिल कर सकी। उनकी तमाम सक्रियता के बाद भी राहुल गांधी अमेठी से हार गए। रायबरेली में भी सोनिया गांधी की जीत का अंतर कम हुआ। प्रियंका ने न तो उत्तर प्रदेश में कोई असर छोड़ा और न ही अन्य राज्यों में। यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि कुछ माह पहले भाजपा शासित तीन राज्यों में जीत हासिल करने के बाद राहुल गांधी इस मुगालते में आ गए थे कि वह मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों की तरह लोकसभा चुनाव में भी मोदी को आसानी से मात दे सकेंगे।

भाजपा की ऐतिहासिक जीत के पीछे मोदी की जो लहर थी उसका पूर्वानुमान भाजपा नेताओं के सिवा और कोई नहीं लगा सका। इसकी भी अनदेखी नहीं कर सकते कि देश के अभिजात्य वर्ग का एक तबका भाजपा के 200 सीटों से कम पर सिमटने की बात करता रहा। यह विशिष्ट वर्ग मतदान के कई दौर समाप्त होने के बाद भी जमीनी हकीकत को स्वीकार करने को तैयार नहीं हुआ। ऐसा शायद इसलिए हुआ, क्योंकि इस वर्ग में वामपंथी सोच वाले चिंतक और मीडिया के कुछ ऐसे लोग हैं जो मोदी को लेकर पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं। इनमें वे कारोबारी भी थे जिनकी काली कमाई पर नोटबंदी और जीएसटी ने विराम लगा दिया था। इन सभी ने मोदी के खिलाफ मुहिम छेड़ रखी थी। उनकी ओर से सोशल मीडिया पर भी दुष्प्रचार किया जा रहा था। चूंकि वे मोदी को हारते हुए देखना चाहते थे इसलिए मतदान बाद आए एक्जिट पोल को भी मानने से इन्कार करते रहे। यही लोग आर्थिक विकास के आंकड़ों को गलत बताते हुए बेरोजगारी बेलगाम होने का रोना रोते रहे और अन्य मुद्दों पर भी सरकार को कठघरे में खड़ा करते रहे। आखिरकार उन्हें मुंह की खानी पड़ी और मोदी फिर प्रचंड बहुमत के साथ देशवासियों की आकांक्षा के प्रतीक बनकर उभरे।

आम चुनाव में बड़ी जीत के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं के उत्साह के बीच प्रधानमंत्री मोदी ने अपने पहले भाषण में एक ओर जहां देश को भरोसा दिलाया कि वह गलत नीयत से कोई काम नहीं करेंगे वहीं दूसरी ओर उन्होंने नकली सेक्युलरिज्म को बेनकाब करते हुए देश को याद दिलाया कि कैसे इस चुनाव में कथित धर्मनिरपेक्षता की बात नहीं उठी। उनका यह बयान उन लोगों के मुंह पर भी तमाचा है जिन्होंने कांग्रेस प्रायोजित अवार्ड वापसी अभियान के जरिये मोदी को घेरने की कोशिश की थी। यह ऐतिहासिक जनमत बता रहा है कि देश की जनता का प्रधानमंत्री पर अटूट विश्वास है। नतीजों के बाद नरेंद्र मोदी का पहला संबोधन उनके व्यक्तित्व में आए निखार का संकेत है। चूंकि देशवासियों का उन पर भरोसा और बढ़ा है इसलिए वे सुखद-सुनहरे भविष्य की कामना कर रहे हैं।

response@jagran.com

नुकसान में भी नफा तलाशने वाले नेता जी

सूर्यकुमार पांडेय

हार गए हैं, तो क्या? खाली समय मिला है। इसका भरपूर लाभ लेंगे। नई समस्याएं तलाशेंगे। न मिलीं, तो पैदा करेंगे

वह कस्बे के चौराहे पर चंद समर्थकों के साथ खड़े थे। हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव में वह भी एक प्रत्याशी हुआ करते थे। जिसे भी देखते, लपककर उसके पैर छू लेते थे। निरंतर झुकने के चलते उनकी कमर दुखने लगी थी। तब उन्होंने इस काम पर अपने पुत्र को लगा दिया था। वह हाथ जोड़ते, उनका बेटा मतदाताओं के पांव छूता। दो पीढ़ियों ने एक साथ मशक्कत की। तब भी क्षेत्र के वोटरों ने उन्हें अपना आशीर्वाद रूपी वोट नहीं दिया। इस तरह जनता के मुंह फेर लेने के चलते उनको हार का मुंह देखना पड़ गया था, लेकिन उनको जनता को अपना मुंह दिखाने में कोई शरम नहीं थी। इस पराजय को लेकर उनके वज्र व्यक्तित्व पर किसी भी प्रकार की उदासी परिलक्षित नहीं थी। वह परम प्रसन्न थे। हंस रहे थे। मैंने कहा, 'आपके हारने के समाचार से आत्मिक कष्ट हुआ।' वह बोले, 'काहे का कष्ट! हार जाने में भी फायदे ही फायदे हैं।' कोई ताजा-ताजा घायल नेता जी बोले कि जख्मी होना भी लाभ का सौदा है तो संशय होने लग जाता है कि अगले ने शर्तिया किसी इंश्योरेंस कंपनी से मोटी रकम का अपना बीमा करा रखा होगा। मगर चुनाव में पराजित होने वालों के लिए तो अभी इस तरह के किसी मेडिक्लेम का प्रावधान नहीं बना, सो मुझे उनकी बातों से आश्चर्य हुआ। मैंने अपनी जिज्ञासा की चिर शांति के लिए उनसे पूछा, ऐसा कैसे?

उस डिफीट खाई हुई विकल आत्मा ने जो वक्तव्य उछाला, उसका सारांश भाव इस प्रकार है-हमने चुनाव-प्रचार के दौरान मतदाताओं को सुनहरे सपने दिखलाए थे। अब उन ख्वाबों की ताबीर की हमारी कोई जवाबदेही या जिम्मेदारी नहीं है। जनता ने जिसको जिताया है वह जाने, उसका काम जाने। हम जवाबदेह नहीं हैं। हमने तो वादे ही ऐसे किए थे कि उन्हें पूरे भी कर देते। नवनिर्वाचित सांसद जी के किए गए सारे के सारे वादे तो हवा-हवाई थे। उनसे ये इस टर्म में तो पूरे होने से रहे। हम सांसद हो गए होते तो क्षेत्र में विकास की गंगा बहा देते। वे एक नहर बहा कर दिखला दें तो हम कसम खाकर कहते हैं कि अपना चुनाव-क्षेत्र बदल लेंगे! अब हमें वोटरों को चिढ़ाने की खुली छूट मिल गई है। वह मिलेंगे तो कह दूंगा, मिल आए अपने नए सांसद जी से! हो गया काम! हमें जिताते, तो यूं चुटकियों में काम कराते। और जिताओ उनको! अजी, अब वह तुम्हारे माननीय सांसद जी हैं। दर्शन भी पा लो उनके तो बड़ी बात है! चाहो तो अभी नंबर मिलाके देख लो। स्विचऑफ न मिले, तब कहना! और अगर मिल भी गया तो कोई दूसरा आदमी उठाएगा। कहेगा, अभी सांसद जी एक जरूरी मीटिंग कर रहे हैं। बाद में बात कीजिएगा। और उनका वह बाद, कभी आएगा ही नहीं।

उनकी और दलीलें भी कम फन्नेखां नहीं थीं। कहने लग गए-चुनाव के समय हमने जिन उद्योगपतियों, व्यवसायियों, अफसरों, ठेकेदारों, रंगदारों से चंदा लिया, अब उनका सहयोग करने की हमारी कोई नैतिक या अनैतिक जिम्मेदारी नहीं है। अब हम उनको कुछ भी लौटाने वाले नहीं। उलटा वे लोग जो पहले हमें चंदा दिया करते थे, अब वे सांत्वना देने आएंगे। हो सकता है, मुझ पर तरस खाकर कुछ और दे दें। आखिरकार उनको भी इसी इलाके में रहना है और अपना धंधा-वंधा करना है! और तो और, अब हमें धरना, प्रदर्शन, बंद, चक्का-जाम करने-कराने वाले अपने सिर-आंखों पर बिठाएंगे। हम उन्हें अपना सफल नेतृत्व देंगे, क्योंकि नेतृत्व देना हमारी पुरानी आदत है। अब हम सरकार के खिलाफ रोज विरोध-प्रदर्शन करेंगे। लोकल मीडिया को अपने पक्ष में करेंगे। हार गए हैं, तो क्या? खाली समय मिला है। इसका भरपूर लाभ लेंगे। नई समस्याएं तलाशेंगे। न मिलीं, तो पैदा करेंगे। आज ऊपर वाले ने हमें करीब से गरीब जनता की सेवा का सुअवसर दिया है। अब हम इस मौके को, कैश और काइंड दोनों ही रूपों में भुनाकर रहेंगे।

मेरी बेचैनी बढ़ती देख उन्होंने समझाया, देखो भाई, वह लीडर ही क्या, जो नुकसान में भी नफा की गुंजाइश न तलाश ले! लोकतंत्र में केवल जीतने वाले के ही दोनों हाथों में लड्डू नहीं हुआ करते हैं। जो लोग हारते हैं, उनके भी मन में लड्डू फूटते हैं। राजनीति में जय-पराजय का खेल तो चलता रहता है। किसी ने यह कभी भी नहीं सुना होगा कि फलां प्रत्याशी को हारने की वजह से हार्ट अटैक आ गया। चुनाव में लाखों-करोड़ों रुपये की जमा-पूंजी स्वाहा हो जाने पर भी पराजित उम्मीदवार के चेहरे पर शिकन नहीं आती। आती है तो चली जाती है। यह सियासत भी एक जुआ ही तो है। जिस दिन दांव सही लग गया, चुटकियों में वारे-न्यारे हो जाएंगे। आखिर जोखिम के बिना मुनाफा कहां होता है। कल की उम्मीद पर ही तो राजनीति की यह दुनिया कायम है।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य | राष्ट्रीय दलों के प्रत्याशी और विजेता

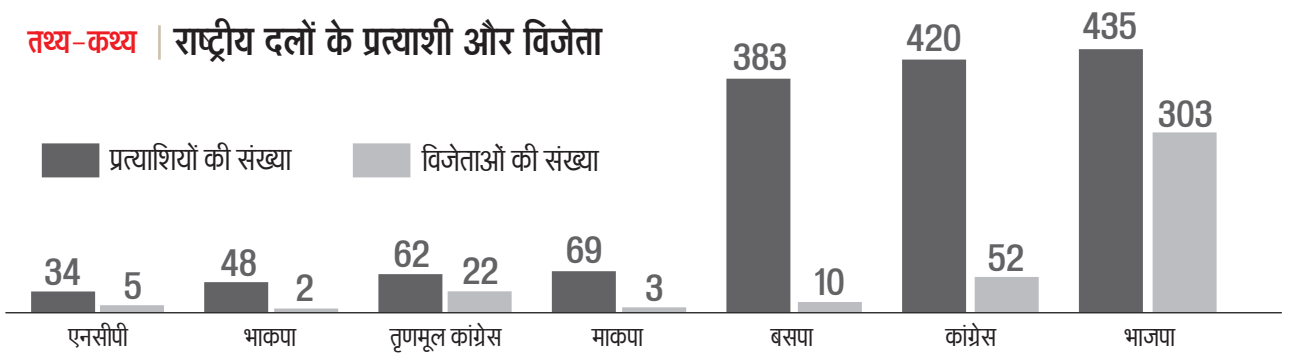

ऊर्जा

वर्तमान

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका भविष्य सुंदर हो, पर वह वर्तमान में तदनुरूप प्रयत्न नहीं करता। वर्तमान के सदुपयोग पर ही भविष्य की सुंदरता निर्भर करती है। क्षण निरपेक्ष होता है उसे सापेक्षता हम प्रदान करते हैं। हमारे विचार क्षण को अनुकूल और प्रतिकूल बनाते हैं। वर्तमान तो अनंतकाल के प्रवाह का एक भाग होता है, जो स्थिर रहना नहीं जानता। जो मानव वर्तमान की उपेक्षा करता है, उसका भविष्य कभी भी सुंदर नहीं हो सकता। जो भी वर्तमान में उपलब्ध है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। भविष्य का द्वार वर्तमान ही है। इसीलिए आज को नष्ट न होने दीजिए। भूतकाल में हुई गड़बड़ियों और दोषों की स्मृति से वर्तमान को नहीं बिगाड़ना चाहिए। वर्तमान क्षण का संस्कार लेकर ही भावी क्षण जन्म लेता है। आचार्य चाणक्य ने कहा था कि जो बीत गया, उसका शोक नहीं करना चाहिए, भविष्य में क्या होगा इसकी व्यर्थ चिंता भी नहीं करनी चाहिए। जो वर्तमान काल का सदुपयोग करते हैं, वही असाधारण व्यक्ति होते हैं।

अज्ञानी सदा सोते रहते हैं और ज्ञानी जागते रहते हैं। वर्तमान में सजग न रहना ही सोना है। भगवद्गीता में भी यही उल्लेख है, जिसका आशय है कि जो समस्त प्राणियों के लिए रात्रि होती है अंधकार होता है, उसमें संयमी पुरुष जागते रहते हैं। उनके लिए वह समय प्रकाशमय होता है। वर्तमान की उपेक्षा अज्ञान की दशा में होती है, लेकिन अतीतकाल अनुभव का काल है। दोष होना मानव जीवन में स्वाभाविक है, लेकिन निर्दोष जीवन जीने की अभिलाषा और संकल्प शक्ति निर्दोष बनाने में सक्षम है। भूतकाल में घटी घटनाएं हमें दिशा बोध प्रदान करती हैं और उनसे हमें वर्तमान में ऊर्जा प्राप्त होती है। वर्तमान का सदुपयोग करने के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता है, वे हैं-सही दृष्टि, जागरूकता, सकारात्मक सोच, संकल्प शक्ति और पुरुषार्थ। जीवन का प्रत्येक क्षण अनमोल है। यह जीवन कब समाप्त हो जाएगा, इसका निश्चित बोध किसी को नहीं है। इसीलिए जीवन के वर्तमान क्षण का सदुपयोग आवश्यक है। वर्तमान को वरदान मानकर वर्तमान के सदुपयोग के लिए पूरी ऊर्जा के साथ तत्पर रहने में ही हमारा हित है। इससे ही हम भविष्य के लिए देखे गए अपने स्वप्नों को साकार कर सकते हैं।

बीना जैन

मंगल पर दिखे बर्फ के भंडार

मुकुल व्यास

इससे पता चलेगा कि वर्तमान मंगल अतीत में कैसा दिखता था और क्या पहले वहां कभी जीवन की कोई संभावना रही होगी

मंगल की सतह के नीचे बर्फ के विशाल भंडार का पता चला है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह बर्फ छुपी हुई ध्रुवीय टोपी का प्रमाण है। 'नासा' के मार्स रिकनायसेंस ऑर्बिटर द्वारा प्रेषित जानकारी के अनुसार मंगल की सतह के नीचे रेत में 1.6 किलोमीटर की गहराई तक बर्फ की चादरें दबी हुई हैं। शोधकर्ताओं के मुताबिक इस खोज से यह साबित होता है कि मंगल की ध्रुवीय टोपियां ग्रह की कक्षा और उसके झुकाव के फलस्वरूप घटती-बढ़ती रहती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार रेत के भंडारों की परतों में जमा बर्फ की मात्रा इतनी अधिक है कि यदि यह बर्फ पिघल जाए तो इससे निकलने वाले पानी की करीब 1.5 मीटर गहरी परत पूरे ग्रह को घेर लेगी।

टेक्सास यूनिवर्सिटी के जियोफिजिक्स इंस्टीट्यूट के शोधार्थी और इस अध्ययन के प्रमुख लेखक स्टेफानो नेरोजी का कहना है कि हम मंगल पर इतनी अधिक बर्फ की उम्मीद नहीं कर रहे थे। मंगल की ध्रुवीय टोपियों के बाद यह बर्फ मंगल पर पानी का तीसरा बड़ा भंडार है। वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि मंगल पर शीत युगों के दौरान बर्फ की परतें बनीं और रेत ने गर्माहट की अवधि में उन्हें सुरक्षित रखा। रेत ने सूरज के विकिरण से भी उसे बचाया। वैज्ञानिक काफी समय से यह अंदाजा लगाने की कोशिश कर रहे थे कि मंगल के ग्लेशियरों की गतिविधि ग्रह के सूरज की तरफ झुकने या उससे दूर होने की वजह से प्रभावित हुई है।

यह माना जा रहा था कि बर्फीली टोपियां पूरी तरह से मंगल से लुप्त हो चुकी हैं, लेकिन नए अध्ययन से पता चला कि यह बर्फ ग्रह की सतह के नीचे कैद है। नेरोजी ने कहा कि ज्यादा हैरानी इस बात पर है कि सतह के नीचे दबे हुए भंडारों में कैद पानी की कुल मात्रा मंगल के ग्लेशियरों और निचले स्थानों पर बर्फ की दबी हुई परतों में जमा समस्त पानी के बराबर ही है। नई खोज से वैज्ञानिकों को यह समझने में मदद मिलेगी कि आज मंगल कैसा दिखता है और अतीत में उसकी जलवायु कैसी थी और क्या वह पृथ्वी की तरह जीवन के लिए अनुकूल थी। यदि हमें भावी मिशनों के लिए मंगल पर तरल जल चाहिए तो यह समझना आवश्यक है कि मंगल की सतह पर कितना पानी है और कितना पानी उसके ध्रुवों में जमा है। इससे काफी बातें सामने आ सकती हैं।

अंतरिक्ष में मानव बस्तियां बसाने की बातें अब ज्यादा गंभीरता के साथ कही जाने लगी हैं। सरकारी और निजी अंतरिक्ष एजेंसियां मंगल पर मनुष्य को उतारने की योजनाएं बना रही हैं। वैज्ञानिक इस पर शोध कर रहे हैं कि मंगल को कैसे मनुष्य के प्रवास योग्य बनाया जा सकता है। एक कंपनी ने मंगल पर मनुष्य के रहने के लिए मॉडल बनाया है जिसे मंगल पर 3डी तकनीक से निर्मित किया जा सकता है। नासा ने इस डिजाइन के लिए कंपनी को पांच लाख डॉलर का इनाम दिया है। प्रसिद्ध उद्यमी एलन मस्क की अंतरिक्ष कंपनी स्पेसएक्स मंगल पर मानव मिशन भेजने की जोर-शोर से तैयारी कर रही है। कंपनी शीघ्र ही अपने स्टारहॉपर रॉकेट का परीक्षण करने जा रही है। स्टारहॉपर विशाल रॉकेट स्टारशिप का बुनियादी संस्करण है जो मनुष्यों को चांद और मंगल पर पहुंचाएगा। यह अंतरिक्ष के मोर्चे पर सफलता का एक नया पड़ाव साबित होगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

राजरंग

दोहरी खुशी का मौका

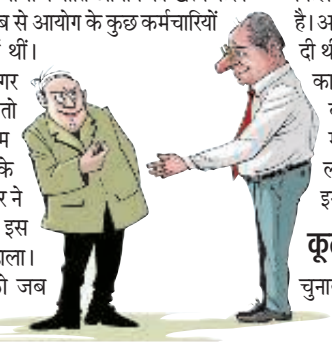

नीति आयोग के बाबुओं के लिए 23 मई का दिन दोहरी खुशी का रहा। जब से राहुल गांधी ने नीति आयोग को खत्म करने का एलान किया था तब से आयोग के कुछ कर्मचारियों की सांसें अटकी हुई थीं। उन्हें लग रहा था अगर कांग्रेस सत्ता में आई तो कहीं आयोग को खत्म न कर दे। आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार ने बाकायदा मीडिया को इस बारे में बयान भी दे डाला। बहरहाल 23 मई को जब नतीजे घोषित हुए तो उन्होंने चैन की सांस ली। इतना ही नहीं आयोग के कई बाबू 23 मई को ही मसूरी रवाना हो गए। बताया जाता है कि वहां उनके लिए कोई ट्रेनिंग रखी गई है। ट्रेनिंग का फायदा सरकार को कितना मिलेगा यह तो वक्त ही बताएगा, फिलहाल पहाड़ों की सैर तो हो ही जाएगी।

बड़े इनाम की आस

पहले वह पुलिस में थे, लेकिन अब राजनीति में हैं। मगर पुलिस विभाग की कुछ आदतें ऐसी हैं कि जाने का नाम नहीं लेती। मसलन, हर काम पर प्रमोशन या इनाम की आस करना। वैसे राजनीति में इनके अभी तक के प्रदर्शन को देखते हुए उनकी आस बहुत तार्किक भी दिखती है। इस बार तो साहब कुछ ज्यादा की आस लगाए हैं। यह इसलिए नहीं कि उन्होंने जीत हासिल की है, बल्कि जिस तरह से जाट राजनीति के एक बड़े किले को नेस्तनाबूद किया है, वैसी मिसाल मिलनी मुश्किल है। अपने पहले चुनाव में उन्होंने बड़े चौधरी साहब को पटखनी दी थी। वहीं इस बार छोटे चौधरी यानी उनके बेटे को भी हार का स्वाद चखाया है। पहली जीत के बाद उन्हें जूनियर मंत्री बनाया गया था। इसका उन्हें काफी मलाल था और कई मौकों पर इजहार करने से भी नहीं चूके। अब उनके करीबी लोगों ने कहना शुरू कर दिया है कि इस बार तो कुछ बड़ा इनाम ही चाहिए।

कूटनीति का तकाजा

चुनाव परिणाम का दिन आम तौर पर विदेश मंत्रालय के लिए बेहद आराम का दिन होता है, लेकिन इस बार ऐसा नहीं था। वास्तव में जितनी गहमागहमी भाजपा कार्यालय में थी विदेश मंत्रालय में भी उससे किसी लिहाज से कम नहीं थी। वजह यह थी कि दुनिया के तमाम देशों के राष्ट्राध्यक्षों के बीच पीएम नरेंद्र मोदी को बधाई देने की होड़ लगी हुई थी और सब यह चाहते थे कि उन्हें ही सबसे पहले मौका मिले। इसके लिए संबंधित राजदूत और उच्चायोगों की तरफ से भारतीय विदेश मंत्रालय के संबंधित क्षेत्र के संयुक्त सचिव के कार्यालय से संपर्क किया गया और संयुक्त सचिव का कार्यालय फिर से मीडिया विभाग के जरिये पीएमओ से संपर्क साध रहा था। पीएमओ से साफ निर्देश था कि ज्यादा से ज्यादा लोगों से बात कराने की कोशिश हो। इसके बाद जब टेलीफोन पर बधाई का सिलसिला शुरू हुआ तो वह खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। इसकी वजह से पीएम पार्टी कार्यालय एक घंटे विलंब से पहुंचे।

निशाने पर नहीं लगा तीर

राजनीति में ज्योतिष के सहारे छलांग मारने की नेताओं की निष्ठा कोई नई बात नहीं है। कुछ नेता यह काम चुपके-चुपके करते हैं तो कइयों को खुलेआम अपनी निष्ठा व्यक्त करने में कोई दिक्कत नहीं होती। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव उन चंद नेताओं में शामिल हैं जो सियासत में कोई भी बड़ा कदम ज्योतिष के हिसाब से उठाते हैं। चाहे विधानसभा चुनाव से पहले आखिरी कैबिनेट की बैठक मुहूर्त के हिसाब से सुबह छह बजे बुलाना हो या फेडरल फ्रंट की सियासत शुरू करने के लिए मंदिर में पूजा-अर्चना। मुख्यमंत्री केसीआर की ज्योतिष गणना फेडरल फ्रंट के मामले में बुरी तरह फेल हो गई। इतना ही नहीं केंद्र में किंगमेकर बनने के साथ अपनी बेटी के. कविता को मंत्री बनवाने की उनकी महत्वाकांक्षा भी धराशायी हो गई। बेटी को मंत्री बनवाना तो दूर केसीआर उन्हें दोबारा संसद में भी नहीं पहुंचा सके। भाजपा ने कविता को केसीआर के गढ़ में ही मात दे दी। ऐसे में केसीआर के सलाहकार ज्योतिष गणना में गलती होने की बात कह रहे हैं और मुहूर्त का समय बताने में भूल करने वाले ज्योतिषी को कोस रहे हैं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन